जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

आत्मार्थी मुमुक्षुओं के लिये बारह भावनाओं का चिन्तन कभी-कभी का नहीं, प्रतिदिन का कार्य है।

ह्न बारह भावना : एक अनु., पृष्ठ : 15

वर्ष : 27, अंक : 9+10 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अगस्त (प्रथम+द्वितीय)2004 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एकप्रति : 2/-

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा आयोजित

27 वें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन समारोह सम्पन्न

जयपुर (राज.) : आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सदुपदेश से निर्मित श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 8 अगस्त को श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा आयोजित 27 वें बृहद् आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन श्री रमेशचन्दजी मंगलजी मेहता परिवार मुम्बई एवं श्री कांतिभाई मोटाणी परिवार मुम्बई के करकमलों से हुआ।

सभा की अध्यक्षता श्री मोतीचन्दजी लुहाड़िया, जोधपुर ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री विमलकुमारजी जैन नीरु कैमिकल्स दिल्ली, श्री अभिनन्दनप्रसादजी सहारनपुर एवं श्री अशोककुमारजी बड़जात्या इन्दौर मंचासीन थे।

विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री महेन्द्रकुमारजी सेठी जयपुर, श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी किशनगढ़, श्री नेमीचन्दजी पहाड़िया पीसांगन, श्री शांतीलालजी चौधरी भीलवाड़ा एवं श्री कन्हैयालालजी दलावत उदयपुर मंचासीन थे।

इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार श्री मिलापचन्दजी डंडिया जयपुर, डॉ. उदयचन्दजी उदयपुर, श्री रेणुकादासजी दोडल हिंगोली, श्री शंभुकुमारजी जैन जयपुर आदि अनेक गणमान्य महानुभाव भी उपस्थित थे।

विद्वत् वर्ग में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन बिजौलियाँ, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री रहली मंचासीन थे।

समारोह में शिक्षण-शिविर का महत्त्व बताते हुए डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि ह्न आज का युग शिविरों का युग है, जहाँ हर छोटे से छोटे कार्य को सम्पन्न करने के लिये शिविर लगाये जाते है; ताकि कम समय में अधिक से अधिक कार्य हो सके। साथ ही उन्होंने कहा कि इन आध्यात्मिक शिविरों की नींव सर्वप्रथम पूज्य गुरुदेवश्री के सानिध्य में सोनगढ़ से प्रारंभ हुई। जो आज भी अनवरतरूप से चल रही है तथा भविष्य में भी चलती रहेगी।

इसके अतिरिक्त श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा, श्री महिपालजी शाह बाँसवाड़ा, कल्पेशजी जैन थांदला, श्री निहालचन्दजी जैन, जयपुर तथा श्री दिगम्बर जैन महासमिति के अध्यक्ष श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर ने भी शिविर का महत्त्व एवं उपयोगिता पर अपने विचार व्यक्त किये।

उद्घाटन सभा के पूर्वी निहालचन्दजी जैन परिवार, ओसवाल इण्डस्ट्रीज, जयपुर के करकमलों से झण्डारोहण किया गया।

इस शिविर के आमन्त्रणकर्त्ता श्री सुखदयालजी देवड़िया परिवार केसली (म.प्र.) एवं श्री प्रेमचन्दजी बजाज परिवार कोटा (राज.) तथा विधान के आयोजनकर्त्ता श्री बाबूलालजी पंचोली परिवार, थांदला एवं श्री महिपालजी धनपालजी शाह परिवार, बाँसवाड़ा हैं।

सभा का संचालन ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद ने किया तथा आभार प्रदर्शन श्री अमृतभाई मेहता फतेपुर ने किया।

शिविर में प्रतिदिन मोक्षमार्गप्रकाशक, छहढ़ाला, तत्त्वार्थसूत्र, लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका, नयचक्र, निमित्तोपादान, गुणस्थान विवेचन आदि विभिन्न विषयों पर कक्षायें एवं प्रवचन संचालित हो रहे हैं।

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

17 से 18 अगस्त, 2004	**मुम्बई**	**स्थानकवासी पर्यूषण**
07 से 09 सितम्बर, 2004	**कोबा-अहमदाबाद**	**आध्यात्मिक शिविर**
11 से 17 सितम्बर, 2004	**मुम्बई**	**श्वेताम्बर पर्यूषण**
18 से 29 सितम्बर, 2004	**कोल्हापुर**	**दिगम्बर पर्यूषण**
17 से 26 अक्टूबर, 2004	**जयपुर**	**शिक्षण-शिविर**

सम्पादकीय –

पञ्चास्तिकाय परिशीलन

13 ह्न रतनचन्द भारिल्ल

गाथा–१८

सो चेव जादि मरणं जादि ण णट्ठो ण चेव उप्पण्णो।
उप्पण्णो य विणट्ठो देवो मणुसो त्ति पज्जाओ ।।१८।।

(हरिगीत)

जन्मे–मरे नित द्रव्य ही पर नाश–उद्भव न लहे।
सुर–मनुज पर्यय की अपेक्षा नाश–उद्भव हैं कहे।।

पिछली १७वीं गाथा में कह आये हैं कि ह्न ''मनुष्य पर्याय का व्यय और नारकी पर्याय का उत्पाद होने पर भी जीव तो जीवभावरूप ही रहता है, वह पलट कर पुद्गल के भावरूप नहीं होता; क्योंकि जीव का उत्पाद-व्यय और ध्रौव्यपना स्वयं से है, पर से नहीं। पर्याय बदलने पर भी जीव नहीं बदलता। निष्कलंक शुद्ध पर्यायें एवं मलिन पर्यायें भी स्वयं से ही होती हैं; कर्मोदय रूप परद्रव्य तो निमित्तमात्र है।''

अब इस गाथा में कहते हैं कि ह्न ''वही जीवद्रव्य पर्यायरूप से जन्म लेता है और मरता है, तथापि वह द्रव्य द्रव्यरूप से न उत्पन्न होता है और न नष्ट होता है।

टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं कि यहाँ द्रव्य कथंचित् व्यय और उत्पादवाला होने पर भी उसका सदैव अविनष्टपना और अनुत्पन्नपना कहा है। जो द्रव्य पूर्वपर्याय के वियोग से और उत्तरपर्याय के संयोग से होनेवाली उभय अवस्थाओं को अपने रूप करता हुआ विनष्ट होता है और उत्पन्न होता दिखाई देता है, वही द्रव्य वैसी उभय अवस्थाओं में व्याप्त होनेवाले प्रतिनियत एक वस्तुत्व के कारणभूत स्वभाव द्वारा अविनष्ट एवं अनुत्पन्न ज्ञात होता है।

द्रव्य की पर्यायें पूर्व-पूर्व परिणाम के नाशरूप और उत्तर-उत्तर परिणाम के उत्पादरूप होने से विनाश-उत्पाद धर्मवाली कही जाती हैं और वे पर्यायें वस्तुरूप द्रव्य से अपृथक्भूत ही हैं; इसलिए पर्यायों के साथ एकवस्तुत्व के कारण उत्पाद-व्यय होने पर जीवद्रव्य को सर्वदा अनुत्पन्न और अविनष्टरूप ही देखना, श्रद्धान करना।

आचार्य जयसेन की टीका में जो कहा गया है, उसका भाव यह है कि जैनमत में वस्तु अनेक स्वभावरूप है। उसकारण द्रव्यार्थिकनय की अपेक्षा द्रव्यरूप से नित्यता घटित होती है और पर्यायार्थिकनय की अपेक्षा पर्यायरूप से अनित्यता घटित होती है। वे द्रव्य और पर्यायें परस्पर सापेक्ष हैं और वह सापेक्षता ''पर्याय से रहित द्रव्य और द्रव्य से रहित पर्याय नहीं है। द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिकनय का परस्पर गौण-मुख्य भाव से एक ही द्रव्य के नित्यता-अनित्यता घटित होती है, उसमें विरोध नहीं है।

कवि हीरानन्दजी उपर्युक्त भाव को इसप्रकार व्यक्त करते हैं ह्न

(सवैया इकतीसा)

लोक परजाय नानारूप धरि डोलै जीव,
मानुष विनास होइ देव अवतरै है।
दरव रूप देखै नै उपजै न विनसै है।
दोनों रूप अपने ही आप मांहि धरै है।
द्रव्य-परजाय सीमा दोऊ समकाल सदा।
एकमेक रहै कोऊ कामैं नांहि परै है।
सम्यक्सुभाव नैन जगै जथा भेद जगै।
वस्तु कौ सरूप जैसो तैसो अनुचरै है।।

जब पर्याय दृष्टि से देखते हैं तो मनुष्य पर्याय का विनाश और देव पर्याय का उत्पाद होता है; परन्तु द्रव्यदृष्टि देखने पर द्रव्य का न विनाश होता है और न उत्पाद।

वस्तु दोनों स्वभावों को अपने में धारण किए है। एक ही समय दोनों ही अपनी-अपनी सीमा में रहते हुए एकमेक रहते हैं।

इसी बात को गुरुदेव श्री कानजीस्वामी ने जो कहा, उसका भाव इसप्रकार है ह्न ''यदि जीव पर के कारण उपजता-विनशता हो, तब तो वह पर्यायार्थिकनय का विषय ही नहीं बन सकता। जब जीव अपनी अस्ति में हो तो ही पर्यायनय का विषय रहता है। द्रव्यार्थिकनय से उत्पाद-व्यय नहीं है और पर्यायार्थिकनय से उत्पाद-व्यय है। अपने में अपने से होने पर ही दोनों नयों का अस्तित्व रहता है।

समयसार, प्रवचनसार और पंचास्तिकाय ह्न इन तीनों ग्रन्थों में स्वाधीन और शुद्धद्रव्य का वर्णन तथा शुद्धनय का कथन है।

आचार्य उमास्वामी ने तत्त्वार्थसूत्र में औदयिकादि भावों को स्वतत्त्व कहा है। वे आत्मा के ही भाव हैं, इसलिए आत्मा ही शुद्ध अथवा पर्याय का कारण है, पर नहीं।

देखो, यहाँ कहते हैं कि आत्मा अपनी पर्याय के कारण उत्पाद-व्यय स्वभाव धारण करता है। कर्म के कारण उपजता-विनशता कहना तो निमित्त का कथन है।

जीव जब स्वयं अपनी पर्यायरूप परिणमित होता है, तब वह उस पर्यायमय हो जाता है। जीव का स्वभाव ही ऐसा है, वह जिन परिणामों को करता है, उन परिणामों में वह एकता धरता है।

जीव का राग के साथ और शुद्धपर्याय के साथ भी अनित्य तादात्म्य संबंध है। यदि पर्याय द्रव्य से सर्वथा अभिन्न हो, तब तो द्रव्य पर्याय बराबर ही रह जायेगा, जबकि पूरा द्रव्यपर्याय में आता नहीं है। इसप्रकार द्रव्य में उत्पाद-व्यय होने पर भी द्रव्य अपेक्षा ध्रुवपना है।''

सारांश यह है कि भाव का नाश नहीं होता और अभाव का उत्पाद नहीं होता। द्रव्य कथंचित् उत्पाद-व्ययवाला होने पर भी सदैव अविनष्ट व अनुत्पन्न होता है।

गाथा–१९

एवं सदो विणासो असदो जीवस्स णत्थि उप्पादो।
तावदिओ जीवाणं देवो माणुसो त्ति गदिणामो ।।१९।।

(हरिगीत)

इस भाँति सत् का व्यय नहिं अर असत् का उत्पाद नहिं।
गति नाम नामक कर्म से सुर–नर–नरक ह्न ये नाम हैं।।

पीछे १८वीं गाथा में यह कहा है कि ह्न यद्यपि यह सत्य है कि जीव जन्म लेता है और मरता है; परन्तु ऐसा पर्याय की अपेक्षा कहा जाता है। द्रव्यरूप से जीव न जन्म लेता है, न मरता है।

कवि हीरानन्दजी ने कहा भी है ह्न

उपजै विनसै जीव फुनि, उपजै विनसै नांहि।
उपजनि विनसनि लसतु है, सुर–नर–परजय मांहि।।

अब आचार्य कुन्दकुन्द ने १९वीं गाथा में जो कहा उसका भाव यह है कि जीव को सत् का विनाश और असत् का उत्पाद नहीं है ह्न ऐसा ध्रुवता की अपेक्षा कहा है। देव जन्मता है और मनुष्य मरता है ह्न ऐसा पर्याय की अपेक्षा कहा जाता है। निमित्तरूप से देव–मनुष्य गति नामकर्म भी उतने ही काल का होता है।

टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं कि ह्न ''यदि वास्तव में जो जीव मरता है, वही जन्मता है और जो जीव जन्मता है वही मरता है तो इसप्रकार सत् का विनाश और असत् का उत्पाद नहीं है ह्न ऐसा निश्चित होता है और 'देव जन्मता है तथा मनुष्य मरता है' ऐसा जो कहा जाता है वह कथन (भी) अविरुद्ध है, क्योंकि मर्यादित काल की देवत्वपर्याय और मनुष्यत्वपर्याय को रचनेवाले देव–गति नामकर्म और मनुष्यगति नामकर्म मात्र उतने काल जितने ही होते हैं।

इसी विषय को बांस की पोरों का दृष्टान्त देकर स्पष्ट किया है।

इसप्रकार पूर्वोक्त तीन गाथाओं में किए गए पर्यायर्थिकनय के व्याख्यान द्वारा मनुष्य–नारकादि रूप से उत्पाद–विनाशत्व घटित होता है; तथापि द्रव्यार्थिकनय से सत/विद्यमान जीव द्रव्य का विनाश और असत्/अविद्यमान जीव द्रव्य का उत्पाद नहीं है।

कविवर हीरानन्दजी इसी बात के समर्थन में कहते हैं कि ह्न

सत–विनास नहिं होत है, असत न उपजै राम।
जीव विसै सुर–नर लसै, देव–मनुष गति नाम।।

आगामी पद्य में बांस की पोर के उदाहरण से विषय का स्पष्टीकरण करते हुए कहते हैं ह्न

(सवैया इकतीसा)

जैसे बाँसदंड एक तामैं गाँठ हैं अनेक,
आप आप सीमा विषै अस्तिभाव आया है।
आन गाँठि विषै आन गाँठि का अभाव लसै,
बाँस दंड एक सबै गाँठिमैं समाया है।।
गाँठि कै अभाव विषै दंडका अभाव नाहिं,
तैसैं कै परजै माहिं द्रव्यरूप गाया है।
दरव है नित्य एक परजै अनित्य नैक
नयकै विलासमध्य वस्तुतत्त्व पाया है।।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी उक्त विषय को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि ह्न ''मनुष्य पर्याय का व्यय होता है और देवपर्याय का उत्पाद होता है' ह्न यह कथन कर्म के निमित्त से आत्मा में होनेवाली विभाव पर्याय की अपेक्षा से सत्य है। इससे यह सिद्ध हुआ कि ध्रुवपने की अपेक्षा से जो जीव मरता है, वही जीव उत्पन्न होता है और उत्पाद–व्यय की अपेक्षा से मरता मनुष्य है और उपजता देव है। पर्याय दृष्टि से भव बदल जाने पर सब संयोग बदल जाते हैं; इसलिए ऐसा कहने में आता है कि 'नया जीव उत्पन्न होता है।' वस्तुत: तो द्रव्य नया उत्पन्न नहीं होता।

जीवद्रव्य त्रिकाली अविनाशी एक है, उसमें क्रमवर्ती बांस की पोरों की भाँति देव मनुष्यादि अनेक पर्यायें हैं। सभी भव एकसाथ नहीं होते, क्रम से ही होते हैं। उनमें जीवद्रव्य त्रिकाल रहता है, इसप्रकार आत्मा को अनेक भव की अपेक्षा अनेक भी कहा जाता है और अन्य–अन्य पर्यायों की अपेक्षा अन्य–अन्य भी कहा जाता है, परन्तु द्रव्य की अपेक्षा सत् का कभी विनाश नहीं होता और असत् का कभी उत्पाद नहीं होता ह्न यही इस गाथा का विषय है। ●

पंचास्तिकाय संग्रह : पद्यानुवाद

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

जीव ये अनुबद्ध ज्ञानावरण आदिक भाव जो।
उनका अशेष अभाव करके जीव होते सिद्ध हैं।।20।।
भाव और अभाव भावाभाव अभावभाव में।
यह जीव गुणपर्यय सहित, संसरण करता इसतरह।।21।।
जीव–पुद्गल धरम–अधरम गगन अस्तिकाय सब।
अस्तित्वमय हैं अकृत, कारणभूत हैं इस लोक के।।22।।
सत्तास्वभावी जीव पुद्गल द्रव्य के परिणमन से।
है सिद्धि जिसकी काल वह, कहा जिनवरदेव ने।।23।।
रस–वर्ण पंचरु फरस अठ अर गंध दो से रहित है।
अगुरुलघुक अमूर्त युत अरु काल वर्तन हेतु है।।24।।
समय–निमिष–कला–घड़ी दिनरात–मास–ऋतु–अयन।
वर्षादि जो व्यवहार है वह पराश्रित जिनवर कहा।।25।।
विलम्ब अथवा शीघ्रता का ज्ञान होता माप से।
माप होता पुद्गलाश्रित काल अन्याश्रित कहा।।26।।
आत्मा है जीव–देह प्रमाण चित्–उपयोगमय।
अमूर्त कर्त्ता–भोक्ता प्रभु कर्म से संयुक्त है ।।27।।

रविवारीय गोष्ठियाँ सानन्द सम्पन्न

1.जयपुर (राज.) : 1. यहाँ श्री टोडरमल दिग. जैन सि. महाविद्यालय द्वारा आयोजित रविवारीय गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 11 जुलाई, 2004 को **देव-शास्त्र-गुरु** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता श्री एम.पी. जैन ने की। गोष्ठी में कुल 12 वक्ता थे, जिसमें उपाध्याय वर्ग से संतोष जैन बक्स्वाहा एवं शास्त्री वर्ग से देवेन्द्र जैन अकाझिरि ने प्रथमस्थान प्राप्त किया। संचालन दीपेश जैन गुढ़ा एवं संयोजन वीरेन्द्र जैन बरां ने किया।

2. दिनांक 18 जुलाई, 2004 को **बारह भावना : एक चिंतन** विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया; जिसकी अध्यक्षता श्री पूनमचन्दजी छाबड़ा ने की; जिसमें उपाध्याय वर्ग से अमोल पाटील हेरले एवं शास्त्री वर्ग से अनिल आलमान हेरले ने प्रथमस्थान प्राप्त किया। मंगलाचरण अंकित जैन लूणदा ने किया। संचालन अमित जैन लुकवासा एवं संयोजन अनंतवीर जैन फिरोजाबाद ने किया।

3. दिनांक 25 जुलाई, 2004 को **द्रव्य-गुण-पर्याय** विषय पर गोष्ठी सम्पन्न हुई; जिसकी अध्यक्षता पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री ने की।

गोष्ठी में उपाध्याय वर्ग से अंकित जैन लूणदा एवं अभिलाष जैन कोटा तथा शास्त्री वर्ग से वरूण शहा मुम्बई ने श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया। मंगलाचरण शंशाक जैन सागर ने किया। संचालन जितेन्द्र जैन छिन्दवाड़ा एवं संयोजन विक्रान्त पाटनी झालरापाटन ने किया।

4. दिनांक 1 अगस्त, 04 को **श्रावक का सदाचार** विषय पर गोष्ठी सम्पन्न हुई; जिसकी अध्यक्षता पण्डित संजीवकुमारजी गोधा ने की।

गोष्ठी में उपाध्याय वर्ग से गजेन्द्र जैन भीण्डर ने तथा शास्त्री वर्ग से अंकुर जैन ने श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया। संचालन अभिषेक जैन सिलवानी एवं संयोजन विक्रान्त पाटनी ने किया। **ह्न भरत अलगौंडर**

2. बाँसवाड़ा (राज.) : यहाँ श्री ज्ञायक चैरिटेबल ट्रस्ट बाँसवाड़ा द्वारा संचालित आचार्य अकलंक शिक्षण संस्थान में भी रविवारीय गोष्ठी का आयोजन **द्रव्य-गुण-पर्याय, अष्टमूलगुण** आदि विविध विषयों पर किया गया; जिसकी अध्यक्षता श्री धनपालजी दोशी ने की।

गोष्ठी में प्रथम स्थान अतुल जैन तथा द्वितीय स्थान अमित जैन एवं भारती लुहाड़िया ने प्राप्त किया। संचालन शौर्य जैन ने किया।

धर्मप्रभावना

1.औरंगाबाद (महा.) : यहाँ के सिडको उपनगर में स्वानुभव स्वाध्याय मंडल के तत्त्वावधान में श्री रत्नाकरजी गाडेकर के निवास स्थान पर बनाये गये जिनमन्दिर एवं स्वाध्याय भवन में दिनांक 19 जून से 2 जुलाई, 04 तक ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर द्वारा तीनों समय 'गुणस्थान' विषय पर प्रवचन एवं कक्षा ली गई; जिसमें प्रारंभ के चार गुणस्थानों का स्वरूप स्पष्ट किया गया। **ह्न नंदकुमार सोईतकर**

2.रायपुर (छ.ग.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर फाफाडीह एवं अद्वनी नगर में दिनांक 28 मई से 13 जून, 2004 तक तीनों समय पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री, जयपुर के मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुए। ज्ञातव्य है कि इसके पूर्व खैरागढ़ नगर में भी आपके प्रवचन हुए।

शिविर एवं विधान सम्पन्न

1. अकलूज (महा.) : यहाँ ग्रीष्मकालीन समय में लगभग 1 माह तक श्री टोडरमल महाविद्यालय, जयपुर के छात्र पण्डित रविन्द्र काले, कारंजा द्वारा प्रतिदिन तीनों समय समयसार, छहढाला एवं रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचन तथा कक्षा का आयोजन किया गया। सायंकाल बालकक्षा एवं जिनेन्द्र भक्ति होती थी। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

ज्ञातव्य है कि यहाँ दिनांक 7 जुलाई, 2004 को श्री पंचपरमेष्ठी मण्डल विधान का आयोजन श्री उदयजी सोनाज द्वारा किया गया।

इस अवसर पर पण्डित केशवरावजी जैन एवं पण्डित स्वप्निलजी जैन, नागपुर द्वारा विधि-विधान के कार्य कराये गये। आपके प्रवचनों के अतिरिक्त स्थानीय विद्वान ब्र. जितेन्द्रजी चंकेश्वरा का लाभ भी मिला।

2. सुसनेर (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर रावला गली में दिनांक 21 से 31 जुलाई, 2004 तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित जगदीशसिंहजी पवांर उज्जैन के दोनों समय मार्मिक प्रवचन हुए तथा सांयकाल बालकक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये। **ह्न केसरीसिंह पाण्डे**

3. उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति के तत्त्वावधान में श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर में दिनांक 26 जून से 2 अगस्त, 2004 तक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़ के दोनों समय रत्नकरण्डश्रावकाचार के आधार से सारगर्भित प्रवचन हुए।

4.कानपुर (उ.प्र.) : यहाँ श्री दि. जैन कुन्दकुन्द स्मारक ट्रस्ट एवं अ. भा. जैन युवा फैड. के संयुक्त तत्त्वावधान में बाल शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में पण्डित किशनचन्दजी जैन, अलवर एवं पण्डित अनुभवप्रकाशजी शास्त्री, कानपुर के मार्मिक प्रवचन हुए।

शिविर के सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित अनिलकुमारजी जैन, भोपाल के निर्देशन में सम्पन्न हुए। **ह्न अक्षय जैन**

आयोजन हेतु सम्पर्क करें

नागपुर (महा.) : आध्यात्मिकसत्पुरूष श्री कानजीस्वामी द्वारा की गई आध्यात्मिकक्रान्ति का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार हो, इस उद्देश्य से अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा नागपुर ने गतवर्ष महाराष्ट्र प्रान्त में एक तत्त्वप्रचार-प्रसार समिति का गठन किया था। फलस्वरूप विगत एक वर्ष में अनेक स्थानों से आमन्त्रण प्राप्त हुये हैं तथा हो रहे हैं। आमंत्रण प्राप्त स्थानों पर विद्वानों के माध्यम से शिविर, प्रवचन, विधानादि द्वारा तत्त्वप्रचार-प्रसार का कार्य अनवरत रूप से चल रहा है।

यदि महाराष्ट्र में या अन्यत्र भी कोई साधर्मीजन, समाज अथवा संस्था अपने यहाँ इसप्रकार के प्रवचन, शिविर, विधानादि का आयोजन करना-कराना चाहें तो वे निम्न पते पर सम्पर्क करें -

पता ह्न श्री विश्वलोचनकुमारजी जैनी
हीराकुटीर, मस्कासाथ नागपुर -441102 (महा.)
फोन ह्न (0712) 2762624 मो. 94221-46642

अष्टाह्निका पर्व पर कार्यक्रम

1. **अलीगढ़ (मंगलायतन-उ.प्र.) :** यहाँ पर्व के अवसर पर आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी द्वारा रचित मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ के आधार से शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया; जिसमें प्रतिदिन प्रवचन-कक्षा, तत्त्वचर्चा, वाद-विवाद, गोष्ठी आदि के माध्यम से मोक्षमार्ग प्रकाशक की निधि बताई गई।

शिविर में ब्र. केशरीचन्दजी धवल, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर एवं डॉ. दीपकजी जैन जयपुर ने मोक्षमार्ग प्रकाशक के अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला।

सम्पूर्ण शिविर श्री पवनकुमारजी जैन एवं श्री अशोककुमारजी लुहाड़िया के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। **- संजय शास्त्री**

2.सहारनपुर (उ.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन 24 तीर्थंकर जिनालय एवं परमागम मंदिर महावीर कॉलोनी में दिनांक 25 जून से 2 जुलाई, 04 तक 170 तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री नागपुर ने सम्पन्न कराये । इस अवसर पर आपके प्रवचनों का लाभ भी मिला।

विचार गोष्ठी सानन्द सम्पन्न

दिल्ली : यहाँ आत्मार्थी ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दि. 25 जुलाई, 2004 को आत्म साधना केन्द्र पर **जैन जीवन शैली** नामक विद्वत गोष्ठी का आयोजन हुआ; जिसके मुख्य वक्ता डॉ. सुदीप जैन दिल्ली थे। गोष्ठी की अध्यक्षता श्री पद्मप्रसाद जैन, सुप्रीम हौजरी ने की तथा मुख्यअतिथि श्री त्रिलोकचन्दजी जैन एवं माणकचन्दजी लुहाड़िया थे।

इस अवसरपर ब्र. पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में पंचकल्याणक प्रचार रथ **कल्याणवर्धिनी** का उद्घाटन श्री जे.के.जैन डिप्टी कमीश्नर के द्वारा किया गया। **ह्न संदीप जैन**

वैराग्य समाचार

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक पण्डित सौरभकुमारजी शास्त्री फिरोजाबाद की दादीजी श्रीमती जैनकुमारी जैन धर्मपत्नी श्री राजकुमारजी जैन का दिनांक 10 अगस्त, 2004 को शान्त परिणामों से देहावसान हो गया है। आप अत्यन्त धार्मिक एवं तत्त्वाभ्यासी महिला थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को 501/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो - यही कामना है।

धवला ग्रंथ पर स्वाध्यायमाला प्रारंभ

मुम्बई (महा.) : यहाँ विदुषी डॉ. उज्ज्वलाजी शाह के निवास स्थान पर धवला ग्रन्थ पर नियमित स्वाध्यायमाला प्रतिदिन प्रात: 8.30 से 10 बजे तक चल रही है; जिसमें अभी तक धवला की चार पुस्तकों का स्वाध्याय समाप्त हो चुका है। इन प्रवचनों के सी.डी. भी तैयार हो रहे हैं, इच्छुक व्यक्ति निम्न पते पर सम्पर्क करें ह्न

श्री दिनेशभाई शाह, 157/9, निर्मला निवास,
सायन (पू.) मुम्बई - 400022, फोन -(022)24073581

आचार्य अकलंक शिक्षण संस्थान का शुभारम्भ

बाँसवाड़ा (राज.) : जैनदर्शन विषय को लेकर उपाध्याय (11वीं, 12वीं) एवं शास्त्री (बी.ए.) कक्षाओं में अध्ययन करनेवाले छात्रों हेतु श्री ज्ञायक चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा दिनांक 11 जुलाई, 2004 को आचार्य अकलंक शिक्षण संस्थान का शुभारम्भ किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया, अलीगढ़ के प्रवचन का लाभ प्राप्त हुआ। इनके अतिरिक्त पण्डित लक्ष्मीचन्दजी डूंगरपुर, पण्डित रीतेशकुमारजी शास्त्री, पण्डित संजयजी शाह, पण्डित आकाशजी शास्त्री, पण्डित आशीषजी शास्त्री, पण्डित मनोजजी शास्त्री, पण्डित निमेशजी शास्त्री, पण्डित सुदीपजी शास्त्री आदि उपस्थित थे।

समारोह के अध्यक्ष श्री शांतिलालजी सेठ बांसवाड़ा एवं मुख्यअतिथि श्री भागचन्दजी कालिका उदयपुर थे। **- राजकुमार शास्त्री**

बच्चों की प्रथम पाठशाला माँ

बालकों को सदाचार के संस्कार, तात्त्विकज्ञान और धार्मिक वातावरण घर में माँ द्वारा ही आधुनिक तरीके से दिये जा सकते हैं; क्योंकि माँ ही बच्चों की प्रथम पाठशाला है। बालकों को कैसे संस्कारित किया जा सकता है - इस दृष्टिकोण से डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया द्वारा जैन नर्सरी, के.जी. भाग-1, के.जी. भाग-2 तथा के.जी. भाग-3 नामक पुस्तकें लिखीं गई हैं।

अपनी इच्छा के प्रतिकूल काम होने पर ना की प्रतिक्रिया गर्दन हिलाकर देना बच्चों को सिखाना नहीं पड़ता तथा सर्वप्रथम बच्चे को हम माँ बोलना सिखाते हैं, उसे माँ के साथ हाँ बोलना भी सिखायें और नर्सरी पढ़ायें । इसप्रकार हाँ और ना के माध्यम से 2-3 वर्ष के शिशु को संस्कारित कर धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण किया जा सकता है।

4 से 6 वर्ष के बच्चों के दृष्टिकोण से लिखी गई के.जी.1, के.जी.2 व के.जी.3 बच्चों में काफी लोकप्रिय हुई है। इनका द्वितीय संस्करण शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाला है। जो महानुभाव इन पुस्तकों में अपना सहयोग देना चाहें, वे अपना चैक या ड्राफ्ट 'आराध्य प्रकाशन' के नाम से निम्न पते पर भेजें - आराध्य प्रकाशन, 4-1704, गुरुकुल टॉवर, जी.एस. रोड, दहीसर (प.) मुम्बई - 400068

पुरस्कार वितरण समारोह

जयपुर : यहाँ श्री दि. जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर में दिनांक 14 जुलाई, 2004 को श्री कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान पाठशाला की बालबोध पाठमाला भाग-1, भाग-2 एवं वीतराग-विज्ञान पाठमाला-भाग-1 की परीक्षा का पुरस्कार वितरण किया गया एवं ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

समारोह के अध्यक्ष श्री धन्यकुमारजी गोधा तथा मुख्यअतिथि श्री माणकचन्दजी मुशरफ थे। इस अवसर पर पण्डित संतोषकुमारजी झांझरी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। सभा का संचालन श्री संजीवकुमारजी गोधा ने तथा संयोजन श्री दीपकजी जैन ने किया।

ज्ञातव्य है कि बालकों की पाठशाला श्रीमती प्रभा जैन एवं श्रीमती मधु गंगवाल द्वारा चलाई जा रही है।

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 11

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

देखो ! पाँच ज्ञानों में ऐसे ज्ञान तो हैं, जो मात्र पर को ही जानते हैं, स्व को नहीं जानते; लेकिन ऐसा कोई ज्ञान नहीं है जो अकेला स्व को ही जानता हो और पर को नहीं जानता हो।

मतिज्ञान स्व और पर दोनों को जानता है, छहों द्रव्य उसके विषय हैं। श्रुतज्ञान के भी छहों द्रव्य विषय हैं। अवधिज्ञान के विषय रूपी पदार्थ हैं, अरूपी नहीं अर्थात् पुद्गलद्रव्य ही उसका विषय हैं। मन:पर्ययज्ञान दूसरे के मन में स्थित विषय को जानता है, न कि अपने मन में स्थित पदार्थ को। केवलज्ञान के छहों द्रव्य विषय हैं। जगत में ऐसा कोई भी ज्ञान बताओ जो मात्र स्व को जानता हो, पर को नहीं जानता हो।

इसे और स्पष्ट करने के लिए प्रवचनसार गाथा ४१की यह तत्त्व-प्रदीपिका टीका महत्त्वपूर्ण है –

''जिसप्रकार विविध प्रकार का ईंधन ईंधनपने का उल्लंघन नहीं करने के कारण प्रज्ज्वलित अग्नि का दाह्य ही है; उसीप्रकार अप्रदेश-सप्रदेश, मूर्त-अमूर्त, अनुत्पन्न और विनष्ट पर्याय समूह ज्ञेयता का उल्लंघन नहीं करने से अनावरण, अतीन्द्रिय ज्ञान सम्पन्न आत्मा के ज्ञेय ही होते हैं।''

ईंधन तो लकड़ी भी होती है, कण्डा भी होता है, कोयला भी होता है, गैस भी होता है; लेकिन अग्नि की तरफ से ये सब न लकड़ी हैं, न कण्डा हैं, न गैस हैं; अग्नि की तरफ से इन सबका एक नाम ईंधन ही है। जो भी उस अग्नि से जलता है, उस सबका नाम ईंधन ही है।

जिसप्रकार दुकानदार के पास आया हुआ हर आदमी ग्राहक है, डॉक्टर के पास आया हुआ हर व्यक्ति मरीज है और वकील के लिए प्रत्येक व्यक्ति क्लाईन्ट है; उसीप्रकार जो ईंधन का उल्लंघन नहीं करता है, वह अग्नि के लिए ईंधन ही है।

इसीप्रकार केवलज्ञान के लिए हर पदार्थ ज्ञेय है।

आपका पुत्र डॉक्टर है। उसके लिए अस्पताल में मुसलमान आए तो भी मरीज है, हिन्दु आए तो भी वह उसका मरीज है, दिगम्बर आए तो भी वह उसका मरीज है, श्वेताम्बर आए तो भी वह उसका मरीज है।

आप अपने पुत्र से कहें कि ह्न ''यह तो मुसलमान है; इसका इलाज तुम क्यों करते हो ?''

तब पुत्र कहेगा कि ह्न ''पापा आप यहाँ से चले जाओ। मेरे यहाँ तो सिर्फ मरीज आते हैं; मुसलमान, हिन्दु, जैनी अथवा दिगम्बर-श्वेताम्बर नहीं आते। मैं उन्हें हिन्दु-मुसलमान के रूप में नहीं देखता हूँ, मैं तो सिर्फ मरीज के रूप में देखता हूँ। मेरा कर्तव्य है कि मेरे शत्रु भी यदि मेरे अस्पताल में आएँ, आपातकालीन कक्ष में आएँ तो वे भी मेरे लिए मरीज ही हैं, मैं मेरी पूरी ताकत से उनका सही इलाज करूँगा।''

अरे भाई ! इतने वीतराग तो आजकल के डॉक्टर भी हैं।

ऐसे ही केवलज्ञान के लिए संपूर्ण लोकालोक ज्ञेय हैं।

क्या गधे के सिर का सींग भी उनके ज्ञान का ज्ञेय बनेगा ? वह तो है ही नहीं, फिर वह ज्ञान का ज्ञेय कैसे बनेगा ?

'वह नहीं है'ह्न ऐसे बनेगा। 'गधे के सिर पर सींग नहीं होता'ह्न इसप्रकार वह उसके ज्ञान का विषय बनेगा।

इसे हम इस उदाहरण के माध्यम से समझ सकते हैं कि ह्न

''आप हमारे प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देंगे ?''

''हाँ ! देंगे।''

तब वह प्रश्न करता है कि ह्न ''क्या आप सर्वज्ञ हैं ?''

''मैं सर्वज्ञ होऊँ या नहीं होऊँ; पर मैं आपके प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अवश्य दूँगा। वह यदि यह पूछे कि मैं अगले भव में क्या होऊँगा ? तो इस प्रश्न का भी उत्तर मेरे पास है और वह यह कि ह्न 'मुझको पता नहीं है।' ह्न यह भी तो एक उत्तर ही है।''

लोकसभा के प्रश्नोत्तरकाल में सेना के मामले में एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न आया। तब नेहरुजी ने कहा था कि ह्न

''देश की सुरक्षा की दृष्टि से इसका जवाब देना उचित नहीं है।''

तब किसी ने कहा कि ह्न ''साहब आप टाल रहे हैं।''

नेहरुजी ने कहा कि ह्न

''कौन कहता है कि जवाब नहीं दिया। सुरक्षा के बिन्दुओं के आधार पर इस प्रश्न का उत्तर देना ठीक नहीं है ह्न यह एक जवाब ही तो है।''

''मुझे नहीं आता है'' ह्न यह भी तो जवाब ही है। इस सन्दर्भ में यह ४५वीं गाथा महत्त्वपूर्ण है ह्न

पुण्णफला अरहंता तेसिं किरिया पुणो हि ओदइया।
मोहादीहिं विरहिदा तम्हा सा खाइग त्ति मदा।।४५।।

अरहन्त भगवान पुण्यफल युक्त हैं और वास्तव में उनकी औदयिकी क्रिया मोहादि से रहित है; इसलिए वह क्षायिकी है ह्न ऐसा माना गया है।

प्रवचनसार के इस अधिकार की इस गाथा को लेकर बहुत विवाद उठाया जाता है।

कहा जाता है कि अरहंत भगवान पुण्य के फल हैं। सामान्य व्यक्ति को ऐसा लगता है कि इस अर्थ में कौन-सा पण्डित गड़बड़ कर सकता है; परन्तु भाईसाहब! यहाँ ऐसा अर्थ है ही नहीं।

यहाँ आचार्यदेव यह कह रहे हैं कि १३वें गुणस्थानवर्ती अरहंत भगवान ने जो पहले पुण्य बांधा था; उसके फल में समवशरण की रचना होती है, दिव्यध्वनि खिरती है। इसप्रकार पुण्य का उदय फला है। इसकारण उनकी क्रिया औदयिकी है अर्थात् कर्म के उदय से हुई है।

भाई ! पुण्य के उदय से संयोग मिलेंगे; परन्तु संयोगों को लेना, नहीं लेना ह्न यह तो हमारे हाथ में है। वे संयोग जितने काल तक उदय होगा, उतने काल तक रहेंगे, फिर बिखर जाएँगे। समवशरण बनेगा, फिर बिखर जाएगा। जब बना था, तब भी उन्हें कोई लेना-देना नहीं था और जब बिखर गया तब भी उन्हें कोई लेना-देना नहीं है। जितना भी पुण्यकर्म उदय में हो, वे उसके निमित्त भी नहीं हैं। उनकी वह औदयिकी क्रिया क्षायिकी जैसी है। टीका में स्पष्ट लिखा है ह्न

''जिनके पुण्यरूपी कल्पवृक्ष के समस्त फल भलीभांति पक गये हैं;

उन अरहंत भगवान की जो भी क्रिया है, वह सब पुण्य के उदय के प्रभाव से उत्पन्न होने के कारण औदयिकी ही है। महामोह राजा की समस्त सेना के क्षय से उत्पन्न होने से मोह-राग-द्वेषरूपी उपरंजकों के अभाव के कारण से वह औदयिकी क्रिया भी चैतन्य के विकार का कारण नहीं होती।

इसकारण उक्त औदयिकी क्रिया को कार्यभूत बंध की अकारणता और कार्यभूत मोक्ष की कारणता के कारण क्षायिकी ही क्यों न मानी जाय? अर्थात् उसे क्षायिकी ही मानना चाहिए।

यहाँ यह नहीं कहा कि पुण्य से अरहंत होते हैं। अरहंतों के जो पुण्य होता है; वह उनके आगामी बंध का कारण नहीं बनता है; इसलिए वह नहीं होने के समान है। उनकी वह क्रिया औदयिकी नहीं है; क्षायिकी जैसी ही है।

गाथा तो हर एक पढ़ता है; लेकिन टीका में जो इसका मर्म प्रगट किया है, उसे कोई जानता ही नहीं है।

पुण्य के फल में अरहंत होते हैं ह्न ऐसा इसका अर्थ है ही नहीं।

ज्ञान का स्वरूप क्या है ? तीर्थंकर का स्वरूप क्या है ? दिव्यध्वनि क्या है ? यह हमारे ख्याल में आवे तो सच्चा जैनदर्शन हमारे ख्याल में आ जावे। ●

पाँचवाँ प्रवचन

तीर्थंकर परमात्मा की दिव्यध्वनि के सार इस प्रवचनसार में ज्ञानतत्त्वप्रज्ञापन महाधिकार के अन्तर्गत ज्ञानाधिकार में सर्वज्ञता के स्वरूप पर चर्चा चल रही है।

सर्वज्ञता के स्वरूप पर प्रकाश डालनेवाली यह गाथा महत्त्वपूर्ण हैह्न

दव्वं अणंतपज्जयमेगमणंताणि दव्वजादाणि।
ण विजाणदि जदि जुगवं किध सो सव्वाणि जाणादि।।४९।।

(हरिगीत)

इक द्रव्य को पर्यय सहित यदि नहीं जाने जीव तो।
फिर जान कैसे सकेगा इक साथ द्रव्यसमूह को।।४९।।

यदि वह आत्मा अनन्त पर्यायोंवाले एकद्रव्य (आत्मद्रव्य) को नहीं जानता है तो वह सभी को एकसाथ कैसे जान सकेगा ?

इस गाथा में अत्यन्त स्पष्टरूप से कहा गया है कि जब वह अपने एकद्रव्य की अनादि-अनंत पर्यायों को भी नहीं जान सकता तो फिर सब द्रव्यों की सब पर्यायों को कैसे जान सकता है ?

लोग अपने क्षयोपशमज्ञान के आधार पर केवलज्ञान को तौलने की कोशिश करते हैं। कोई कहता है कि केवली भगवान सबको जानते तो हैं; लेकिन एकसाथ कैसे जान सकते हैं ? कोई कहता है कि जब अपने को जानते हैं, तब पर को कैसे जान सकते हैं ? कोई कहता है कि भूतकाल की जो पर्यायें नष्ट हो गई हैं, उन्हें कैसे जानेंगे ? कोई कहता है कि भविष्य की पर्यायें अभी पैदा ही नहीं हुई हैं; उन्हें कैसे जानेंगे ?

लोग तो भूत और भविष्य की पर्यायों में भी अन्तर करते हैं। कहते हैं कि भूतकाल की पर्यायें तो हो चुकी हैं; इसलिए वे तो निश्चित हैं। उनमें तो किसी भी प्रकार के फेरफार की सम्भावना नहीं है; किन्तु भविष्य की पर्यायें तो अभी हुई ही नहीं हैं। अत: वे तो निश्चित नहीं हैं।

केवलज्ञान के स्वरूप के बारे में भी वे लोग कहते हैं कि आत्मा पर को जानता ही नहीं है; मात्र स्वयं को ही जानता है। अपनी ही पर्यायों के बारे में कहते हैं कि भूतकाल की और भविष्य की पर्यायों को नहीं जानता है; वह तो अपने त्रिकाली ध्रुव, जो दृष्टि का विषय है, मात्र उसे ही जानता है; क्योंकि पर्यायें भी तो पर हैं।

निश्चय से स्व को जानता है और व्यवहार से पर को जानता है। यहाँ स्व में पर्यायें लेना है या नहीं ? केवलज्ञान भी तो स्वयं एक पर्याय ही है।

यदि स्व में अपने द्रव्य-गुण-पर्याय लें तो अनादिकाल से अनंतकाल तक की जितनी पर्यायें अभी हैं, हो गई हैं और होंगी; वे सब स्व में आ जाने से उन्हें तो यह आत्मा जानेगा ही।

इससे यह बात सिद्ध हो ही गई कि **अनादिकाल से अनंतकाल की सब पर्यायें जानी जा सकती हैं; अत: वे निश्चित भी हैं ही। एक द्रव्य की पर्यायें निश्चित हैं तो दूसरे द्रव्य की भी निश्चित ही हैं। इसप्रकार आत्मा सर्व द्रव्यों की सर्व पर्यायों को एकसाथ जानता है** ह्न यह सिद्ध कर रहे हैं।

कोई ज्योतिषी कहे कि इनका तो मैं भूत-भविष्य सब बता सकता हूँ; लेकिन तुम्हारा नहीं। इसका अर्थ यह है कि वह ढोंगी ज्योतिषी है; क्योंकि जब वह एक व्यक्ति का भविष्य बता सकता है तो फिर दूसरे का क्यों नहीं बता सकता ? असली बात तो यह है कि उसकी सारी जानकारियाँ वह पहले से ही एकत्रित कर लाया है; अत: भूतकाल की सब बातें एकदम सही बताता है। जब वह देखता है कि उसपर श्रद्धा हो गई है, तब भविष्य की गप्पे ठोकता है; क्योंकि भविष्य की बात जबतक गलत साबित होगी, तबतक वह रहेगा ही नहीं। जवाब देने का सवाल ही नहीं है।

आप नरक जाएँगे या स्वर्ग जाएँगे अथवा तीन भव बाद मोक्ष जाएँगे ह्न ऐसा कुछ भी बोलो। तीन भव पश्चात् यदि मोक्ष नहीं मिला तो उस बतानेवाले को कहाँ ढूँढेगे ? अगले भवों की घोषणा करने में तो कोई हानि है ही नहीं। इस भव की इसप्रकार की बातें कि तुम्हारा बुढ़ापा बहुत बढ़िया कटेगा; कहने में भी कोई हानि नहीं है; क्योंकि जब उसका बुढ़ापा आएगा, तब हम होंगे या नहीं अथवा कहाँ होंगे ? उसका बुढ़ापा आएगा भी या नहीं या वह बुढ़ापा आने के पहले ही मर जाएगा, तब भी वह हमें पूछने नहीं आ पाएगा। इसप्रकार भविष्य की घोषणायें करने में भी किसी तरह का खतरा नहीं है।

भूतकाल की सब बातें बताने पर यदि कोई व्यक्ति यह कहे कि यदि तुमने इनकी भूतकाल की बातें बता दी तो मेरी भी बता दो; तब वह कहता है कि नहीं, नहीं; मैं आपके बारे में तो नहीं जानता। मुझे अध्ययन करना पड़ेगा; तभी बता पाऊँगा। वह ऐसा इसलिए कहता है; क्योंकि इस नूतन व्यक्ति की इसके पास कोई जानकारी ही नहीं है।

तब वह कहता है आपने जैसे इनका हाथ देखा है, वैसे ही मेरा हाथ भी देख लो; पर इसका उसके पास कोई उत्तर नहीं होता।

इसलिए केवलज्ञान का स्वरूप अवश्य समझना चाहिए। यदि यह ज्ञान सबको नहीं जानता है तो हमें यह मानना पड़ेगा कि वह एक को भी नहीं जानता है। यदि सबको नहीं जानता है तो जानता ही नहीं है ह्न ऐसा मानना पड़ेगा। **(क्रमश:)**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

गुजरात प्रान्त में अन्याय नहीं होगा : नवलकिशोर शर्मा

जयपुर : यहाँ दिनांक 21 जुलाई, 2004 को गिरनार पर्वत के मूलस्वरूप के साथ छेड़छाड़ के मामले को मद्देनजर रखते हुये जैन संस्कृति रक्षामंच के एक शिष्ट मण्डल ने गुजरात के नये मनोनीत राज्यपाल श्री नवलकिशोरजी शर्मा से वार्ता की।

उन्हें बताया गया कि गिरनार पर्वत 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ की निर्वाणस्थली है, जो सदियों से जैनधर्मावलम्बियों की श्रद्धा का केन्द्र रहा है।

सन् 1980 में राज्यशासन ने गिरनारपर्वत को राज्य सरकार की सम्पदा के रूप में राष्ट्रीय स्मारक घोषित किया, जिसपर कोई भी नवीन निर्माण कार्य नहीं करा सकता है; किन्तु अप्रैल-2004 से बाबाओं ने दत्तात्रय की मूर्ति पाँचवें टोंक पर स्थापित करने के प्रबंध गुजरात सरकार की साठ-गांठ से किये तथा एक संस्था को निर्माण कार्य के लिये गठित कर राज्य शासन से निर्माण की प्रार्थना की; किन्तु निर्माण की स्वीकृति मिलने के पूर्व ही निर्माण प्रारंभ कर दिया गया।

जैन संस्कृति रक्षामंच के अध्यक्ष श्री मिलापचन्दजी डंडिया ने मनोनीत राज्यपाल को बताया कि पर्वत के चौथे और पाँचवें टोंक पर सदियों पुरानी जैन प्रतिमाओं व चरणों की निरंतर अवमानना की जा रही है तथा जैन धर्मावलम्बियों द्वारा पूजा-अर्चना किये जाने में बाधा उत्पन्न की जा रही है।

गुजरात के राज्यपाल श्री नवलकिशोर शर्मा से वार्ता करते हुये बांए से सर्वश्री णमोकार जैन, महेन्द्रकुमार पाटनी, पं. रतनचन्द भारिल्ल, धर्मचन्द पहाड़िया एवं न्यायमूर्ति पानाचन्द जैन

मंच के परामर्शदाता न्यायमूर्ति श्री पानाचन्द जैन ने मामले के कानूनी पहलुओं पर प्रकाश डालते हुये राज्यपाल से निवेदन किया कि वे स्वयं इस बात में हस्तक्षेप कर गिरनारजी क्षेत्र के मूलस्वरूप को बहाल कराएँ; ताकि जैन धर्मावलम्बी निर्बाधरूप से अपने तीर्थ पर जाकर पूजा आदि कर सके।

श्री नवलकिशोरजी शर्मा से मिलने गये जैन संस्कृति रक्षा मंच के इस प्रतिनिधि मण्डल में श्री महेन्द्रकुमार पाटनी, पण्डित रतनचन्द भारिल्ल, श्री धर्मचन्द पहाड़िया, श्री णमोकार जैन, श्री राकेश तोतूका, श्री सुभद्र पापड़ीवाल, श्रीमती ऊषा पापड़ीवाल तथा श्रीमती कमला काला आदि सहित विभिन्न जैन संस्थाओं के प्रतिनिधि शामिल थे।

राज्यपाल महोदय ने उक्त बात सुनकर जैन समाज को आश्वासन दिया कि यदि यह मामला उनके सामने लाया गया तो नियमों की परिधि में जो कुछ भी हो सकेगा, वे अवश्य करेंगे। जैनसमाज की बातों को ध्यान में रखते हुये समुचित कार्यवाही की जायेगी, उनके प्रति किसी प्रकार का अन्याय नहीं होने देंगे।

प्रतिनिधि मण्डल ने राज्यपाल महोदय को एक विस्तृत ज्ञापन भी प्रस्तुत किया।

टिकिट भेजकर सत्साहित्य नि:शुल्क मंगा लें

आध्यात्मिक रुचिसम्पन्न **पण्डित नेमीचन्दजी पाटनी, आगरा** द्वारा जिनवाणी का सूक्ष्मता से अध्ययन करके साररूप में लिखित **सुखी होने का उपाय भाग-1 से 8 तक,** 8 पुस्तकों का सैट, जिनके कुल पृष्ठ - 1294 और कुल मूल्य 70/- रुपये हैं को श्री मगनमल सोभागमल चैरिटेबल ट्रस्ट मुम्बई की ओर से मन्दिरों, संस्थाओं, त्यागियों, मुमुक्षुओं को स्वाध्यायार्थ नि:शुल्क भेंट स्वरूप दिया जा रहा है।

इच्छुक महानुभाव निम्न पते पर डाक खर्च के लिये **17/- (सत्रह रुपये)** के फ्रेश डाक टिकिट भेजकर मंगा लेवें। डाक टिकिट भेजने की अंतिम तिथि 31 अक्टूबर, 2004 है।

पता ह्न प्रबन्धक, नि:शुल्क साहित्य वितरण विभाग,
श्री टोडरमल स्मारक भवन,
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

'वीर' पत्रिका का पता परिवर्तन

अखिल भारतवर्षीय दि. जैन परिषद परीक्षा बोर्ड एवं वीर पत्रिका का कार्यालय 'नं. 10, दरियागंज, नई दिल्ली' से बदलकर 'अपनी बिल्डिंग श्याम भवन, फ्लैट नं.10, 3611, नेताजी सुभाषमार्ग, दरियागंज नई दिल्ली-02' में हो गया है। **ह्न महावीरप्रसाद जैन**

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) अगस्त-2004 (संयुक्तांक)
J. P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास ❊ **पं. जितेन्द्र वि.राठी शास्त्री**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127